रविवार, दिनाँक **02-04-2023** सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल, महाबीर जी दे नाल ओ रघुनाथ जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, प्रेम वैराग साँवले चरणां दा प्यार।

साँवले चरणां दा प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, साँवले चरणां दी प्रीत रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सम सन्तोष सत शास्त्र दा विचार।

सत शास्त्र दा विचार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, शब्द सुरति दा मिलाप रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सिया राम लक्ष्मण संग होवन बलधार।

संग होवन बलधार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, बनिया रहे दासियां दा सत्संग नाल प्यार।

सत्संग नाल प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

मैं दासी तुआडे चरणां तों वारी, संगतां लावन मेरे बलधारी।

अंजनी लाल अग्गूं साडी नमस्कार, अग्गूं साडी नमस्कार ।

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

——

राम प्यारा राम, सिमर लै राम सिमर लै राम।

जिन्हुं सिमरे कुल जहान, सिमर लै राम सिमर लै राम।।

चन्द्रमा हिन हनुमान जी, कई सूरजां दे सूरज हैन राम।

नाम ध्याओ महाबीर जी दा, खुश होवन राजा राम।।

सिमर लै राम, सिमर लै राम, राम प्यारा राम, सिमर लै राम।

संत ओही महात्मा ओही, शिव ब्रह्मा ओही जान।

असां भुलियां होइयां दासियां नू, महाबीर जी मिलाया राजा राम।

सिमर लै राम, सिमर लै राम, राम प्यारा राम, सिमर लै राम।।

सोलहां हज़ार हिन नाड़ियां, बलधारी दिखाया राम।

रोम रोम में रम रहे, राम राम सिया राम।।

सिमर लै राम, सिमर लै राम, राम प्यारा राम, सिमर लै राम।

हृदय विच सिया राम वसे, भैणां ढूंडन कित्थे जान।।

ढूंडदी ढूंडदी थक गई बलधारी मिलाया राम।

सिमर लै राम, सिमर लै राम, राम प्यारा राम, सिमर लै राम।।

कीर्तन करो श्री राम जी दा, बलधारी ए फ़रमान।

सारियां दासियां हथ जोड़ के राम रटो सिया राम।।

सिमर लै राम, सिमर लै राम, राम प्यारा राम, सिमर लै राम।

ध्वनिः

चरण पकड़ी बैठी हां तेरे, कित्थे जावां छोड़ के।

दर्श दिखाया घर विच प्यारे, बैठी हाँ हथ जोड़ के।।

सजनों सच्चेपातशाह जी के मन में जब सजन श्री हनुमान जी के प्रति लगन लग गई और उन्हें उनका साक्षात्कार हो गया तो उन्होंने उनसे सांसारिक वस्तुएँ माँगने की बजाए विशेष

रूप से सत्-शास्त्र का विचार माँगा और फिर उसी विचारधारा को धारण किया। ऐसा होने पर उन्हें अपने ही हृदय में उस परमात्मा के दर्शन हो गये। जब सजन श्री शहनशाह जी ने उन पर इस प्रकार अपार कृपा की तो सच्चेपातशाह जी उन्हें कहने लगे कि अब मैं आपकी चरण-शरण छोड़ कर दूसरी किस जगह जाऊँ? अतः हे महाबीर जी ! मुझ सुरत को अपनी चरण-शरण में स्थान दो ताकि मैं आपके द्वारा प्रदत्त सत्-शास्त्र के विचार को ग्रहण कर आत्मदर्शन कर सकूँ और अपने यथार्थ को जान जाऊँ। सो हमें भी उपरोक्त भजन व कीर्तन से सीख लेनी है और स्वीकारना है कि ईश्वर बाहर खोजने से नहीं मिलते क्योंकि वह अपने आप में सर्व-शक्तिमान हैं और यह पूरा ब्रह्माण्ड उसकी शक्ति का ही तो प्रदर्शन है। फिर मानना है कि वह प्रभु सर्व-व्यापक है यानि ब्रह्माण्ड की हर वस्तु में उनका दर्शन है। इस तरह स्पष्ट है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों वाली वस्तुओं में उसी परमात्मा की शक्ति निहित है और सबके हृदयों में वही परमात्मा ही विराजमान है। इससे स्पष्ट होता है कि जीव, जगत और ब्रह्म का सत्य आत्मज्ञान के रूप में हमारे पास है। उस सत्य को धारण करते जाओ। ऐसा करने से आज तक अपनाया हुआ झूठ जो कि अधर्म का हेतु है, वह समाप्त होता जाएगा और परिणामतः हमारा हृदय सत्यज्ञान से प्रकाशित होता जाएगा। हृदय प्रकाशित होने पर स्वतः ही हमारा ख़्याल-ध्यान उस नित्य प्रकाश संग जुड़ जाएगा और हम स्वयंमेव अपना ज्ञान यानि आत्मिकज्ञान प्राप्त करने के योग्य बन जाएँगे। इसीलिए तो सच्चेपातशाह जी ने भी कहा हैः-

चरण पकड़ी बैठी हां तेरे, कित्थे जावां छोड़ के।

दर्श दिखाया घर विच प्यारे, बैठी हाँ हथ जोड़ के।।

अर्थात मैं तो आपके चरण यानि विचारों को पकड़कर बैठी हुई हूँ और अब इन विचारों को छोड़कर क्या धारण करूँ क्योंकि इनके अतिरिक्त जो भी है वह नकारात्मक है और उसको धारण करने का दुष्परिणाम हम बहुत भोग चुके हैं। वही दुष्परिणाम सजनों आप, हम व सब अन्य भी भोग रहे हैं। इससे ज्ञात होता है कि कुदरत का नियम समरस चलता है। सच्चेपातशाह जी के लिए भी वही नियम रहा जो आपके लिए है। सो दुःखों से छुटकारा पाने की जो युक्ति उन्होंने अपनायी वही युक्ति हमें भी अपनाने की आवश्यकता है। तभी हम अपने जीवन का सद्परिणाम सहज लेने में समर्थ हो सकते हैं। इस परिणाम को प्राप्त करने हेतु ही इस चैत्र के यज्ञ पर - ब्रह्म क्या है, ब्रह्मसत्ता क्या है, ब्रह्म-स्वरूप क्या है, ब्रह्म-भाव क्या है, शब्द गुरु के रूप में ब्रह्म की महत्ता क्या है और ब्रह्मपद क्या है, इस

विषय पर विस्तार से बात हुई। इस बातचीत को सुनने के उपरान्त जब हमें समझ आ गया कि सर्व-व्यापक ईश्वर एक ही है और उसकी ब्रह्म-शक्ति से ही यह भौतिक शरीर सक्रिय हो रहा है तो हमारे लिए बनता है कि हम, बोर्डों में जैसा लिखा हुआ है, मूलमन्त्र आद् अक्षर ओ३म जो है अमर आत्मा, उस को अपना गुरु मानकर, विधान अनुसार अपनी ब्रह्मसत्ता को ग्रहण करें और प्रकाशमय/ज्ञानमय अवस्था में आ जाएँ। आशय यह है कि मूलमन्त्र ओ३म् के साथ अपने ख़्याल व ध्यान का नाता जोड़ें और सत्-शास्त्र के विचारों को धारण करें। सजनों यह सलीके में आने की बात है। इस परिवर्तन द्वारा ही हम अपना जीवन सफल बना सकते हैं।

इस सन्दर्भ में सजनों इसी परिवर्तन हेतु यह सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कलुकाल के भटके हुए अज्ञानमय इन्सानों को अपने यथार्थ ब्रह्म-स्वरूप का बोध करने के लिए ब्रह्मभाव धारण करने का आवाहन दे रहा है। सजनों जब ब्रह्मभाव को अपना लोगे तो स्वभाव भी ब्रह्ममय हो जाएगा। परिणामतः हमारा ख़्याल स्वच्छ हो जाएगा। फिर अपने मन को ब्रह्मलीन करना हमारे लिए कोई कठिन बात नहीं रहेगी। आशय यह है कि फिर ब्रह्मसत्ता को ग्रहणकर परमात्म-शक्ति का भान करना और उसकी सर्व-व्यापकता को जानना सहज हो जाएगा। मानो हमारा यही परमात्म स्वरूप ही त्रिकालदर्शी है। परमात्म स्वरूप को पहचान गए तो फिर त्रिकालदर्शी होने से कोई नहीं रोक सकेगा क्योंकि हमारे अन्दर सत्य उजागर हो जाएगा और हमारा मन शान्त व समूचा वातावरण निर्मल हो जाएगा। इस निर्मलता में जब हमारा ख़्याल व ध्यान स्थित हो जाएगा तो हमें अपने आत्म-स्वरूप का बोध हो जाएगा। इस तरह सजनों जब आत्म यथार्थ जान जाओगे तो फिर परमात्मा उस यथार्थ में प्रगट हो जाएँगे और हम ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाएँगे। कहने का आशय यह है कि जिस शक्ति से हम प्रगट हुए, जिस द्वारा हम चल-फिर व खा-पी रहे हैं यानि सब कुछ कर रहे हैं उसको ग्रहणकर हम वैसे ही शक्तिमान हो जाएँगे। ऐसा होने पर मौत भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी। इस उपलब्धि के तहत मानो कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है। अतः लगन से आगे बढ़ो और ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाओ। इस सन्दर्भ में अब ध्यान से सुनोः-

(श्री हनुमान जी के मुख के शब्द)

कुर्सी ते जब बैठ गये करने लगे प्रचार।

सुन लौ मेरे साथियो पकड़ो शब्द विचार, कुर्सी ते जब बैठ गये।।

पकड़ो शब्द विचार, जे जीवन बनाना जे।

जैं जीवन बना लिया अपना, फिर नहीं पछोताना जे।

फिर नहीं पछोताना जे, फिर नहीं पछोताना।

जैं जीवन बना लिया अपना, फिर नहीं पछोताना जे।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

वेद पुकारे, शास्त्र पुकारे, पुकारे वेदों दे रचान वाला।

कलुकाल हुण हटना जे, पुकारे वेदों दे बनान वाला।।

पुकारे वेदों दे बनान वाला, पुकारे वेदों दे बनान वाला।

कलुकाल हुण हटना जे, पुकारे वेदों दे बनान वाला।।

रटन करो नगर निवासियो, हनुमान जी दा नाम सुखल्ला जे।

ओ रौशनी अपनी पहचान कर लौ, हनुमान जी दे कोलों कोई कल्ला जे।।

हनुमान जी दे कोलों कोई कल्ला जे, हनुमान जी दे कोलों कोई कल्ला जे।

ओ रौशनी अपनी पहचान कर लौ, हनुमान जी दे कोलों कोई कल्ला जे।।

(श्री महाबीर जी कह रहे हैं)

वड छोट ओथे है नहीं, न पकड़ो वड दी चाल।

वड दी चाल जैं पकड़ी, दयालु बाहों पकड़ के देनगे निकाल।।

बाहों पकड़ के देनगे निकाल, बाहों पकड़ के देनगे निकाल।

वड दी चाल जैं पकड़ी, दयालु बाहों पकड़ के देनगे निकाल।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

एक ही मैं हो चुका दूसरा नहीं कोय।

दूसरा कोई किस तरह कहे जब एक एक ही होय।।

कौन करे मेरी मानता, कौन करे मेरी पूजा।

एक हूं सारे भूमण्डल, है नहीं कोई दूजा।।

सजनों इस कीर्तन में मुख्य क्या बात हुई है?

'शब्द विचार पकड़ने की'।

इसमें कौन सी कुर्सी का जिक्र हुआ है?

'त्रिलोकी की कुर्सी'।

शब्द-विचार से क्या तात्पर्य है?

'ईश्वर के मुख की वाणी यानि गुरुमत से'।

यह गुरुमत कहाँ वर्णित है?

'वेद-शास्त्रों में'।

वेद-शास्त्रों को रचाने वाला कौन है?

'कुदरत'।

ठीक कहा, परमात्मा की शक्ति कुदरत ने ही इनकी रचना की है और यही कुदरत हमारी, आपकी बनत भी बनाती है। अब यह बताओ कि यह सारा सत्य आज के भ्रमित बुद्धि इन्सानों को बताना क्यों आवश्यक है? - क्योंकि कलुकाल जा रहा है और सतवस्तु आ रही है।

इस परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए हमें अपने जीवन यापन करने के तरीके में यकदम बदलाव लाने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में मानना है कि त्रेता से लेकर अब तक जितना भी मानवों द्वारा वर्णित ज्ञान है वह मन-गढ़ंत है। इस मन-गढ़ंत ज्ञान को (चाहे वह किसी से माता से-पिता से, बन्धुओं से, समाज से, शिक्षकों से प्राप्त हुआ हो) मुकम्मल तौर पर त्यागना है और परिपूर्ण अवस्था में आने हेतु कुदरती ग्रन्थ में वर्णित सत्यज्ञान को अपनाना है। यहाँ मानो कि आद्कालीन सृष्टि रचना के समय कुदरत ने जो सत्यज्ञान प्रदान किया, उसका एक-एक शब्द सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित है। यह ज्ञान कोई लम्बा ज्ञान नहीं है अपितु सूक्ष्म ज्ञान है। इस ज्ञान को धारणे व तद्नुकूल भाव-स्वभाव अपनाने पर मन एक भाव में स्थित हो जाता है और इन्सान एकता, एक-अवस्था में आ जाता है।

इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों त्रेता, द्वापर व कलियुग से चले आ रहे ज्ञान से ऊपर उठो और सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित जो सत्यज्ञान है उन शब्द ब्रह्म विचारों को धारणकर सतयुगी संस्कृति के प्रतीक बन जाओ। जानो यह कोई कठिन कार्य नहीं है अपितु अत्यन्त ही सहज है क्योंकि इसके लिए केवल समभाव नज़रों में कर समदर्शिता अनुरूप परस्पर सजनभाव का व्यवहार करने में दक्ष होना है। इस तरह विचार, सत्-जबान, एक-दृष्टि पर खड़े हो एकता, एक-अवस्था में आ जाना है और यही तरीका स्वाभाविक पतन से उबरने हेतु सबको बताना है। यही सजनों आपके लिए इस साल का लक्ष्य है और इस हेतु आप सबको जागृति में आकर समयबद्ध पूरा करने में समर्थ हो जाना है। अब बोलोः-

नये साल का नया लक्ष्य है

आगे बढ़ने और बढ़ाने का।

सतवस्तु की संस्कृति को

जन-जन तक पहुँचाने का।।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।